13 दीदी की डायरी

P2RZ63

नये गद्य रूप 'डायरी' से परिचित कराता यह पाठ डायरी लेखन के साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से मानवीय सरोकारों और जीवन के विविध अनुभवों का भी साक्षात्कार कराता है।

गुलाब के फूल–सी नन्हीं संजू। है तो अभी छोटी पर है बड़ी सयानी। कक्षा आठ में पढ़ती है। स्वभाव से हँसमुख है। खूब हँसती हँसाती है। चुटकुले सुनाए तो हँसी के फव्वारे छूटने लग जाते हैं।

संजू को किताबें पढ़ने का शौक है। कहानी, कविता, कॉमिक्स आदि। यह शौक उसे माँ की देखा–देखी लगा है। संजू चाहे कक्षा में अच्छे नम्बर लाए या जन्म–दिन मनाए, उसे उपहार मिलता है पुस्तक का। फलतः उसके घर में छोटा–सा पुस्तकालय बन गया है। स्कूल में भी उसे चटपटी पुस्तक की तलाश रहती है।

अभी पिछले दिनों संजू ने गाँधी साहित्य पढ़ा। बापू के **'सत्य के प्रयोग'** उसे बहुत पसन्द आए। बापू ने इन प्रयोगों को अपनी डायरी में लिखा था। संजू ने सोचा वह भी डायरी लिखेगी। माँ ने भी उसका हौसला बढ़ाया। पिताजी को पता चला तो बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे एक सुन्दर डायरी ला दी।

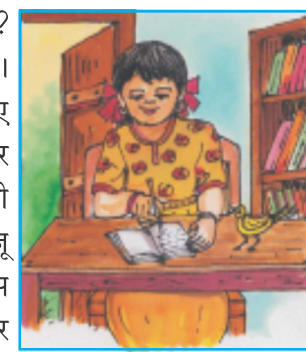

अब संजू मुश्किल में पड़ गई। वह कैसे शुरू करे? तभी उसे याद आया, उसकी दीदी भी तो डायरी लिखती है। उसने दीदी को अपनी इच्छा बताई। दीदी ने हौसला बढ़ाते हुए कहा–यह तो कोई कठिन बात नहीं। बस, रात को मन लगाकर बैठ जाओ। दिनभर की सारी घटनाएँ याद करो और वैसी की वैसी लिख दो। बस इसे प्रतिदिन लिखते रहना जरूरी है। संजू ने हठ करते हुए कहा–''दीदी, अपनी डायरी दिखा दो ना। बस थोड़ा–सा पढ़कर लौटा दूँगी।'' दीदी पहले तो हिचकिचाई, फिर बात मान ली। संजू ने दीदी की डायरी के जो पृष्ठ पढ़े वे नीचे दिए जा रहे हैं।

1 जनवरी, 97

कॉलेज में कक्षा के सामने ठक–ठक होती रही। कारीगर पत्थर तराश रहे थे। एक छोटी–सी छेनी से वे पत्थर में फूल–पत्तियाँ उकेर रहे थे।

2 जनवरी, 97

आज सुबह शीला के घर गई। वह स्नानघर में थी। अकेली बैठे–बैठे क्या करती! पत्रिका का पुराना रंगीन पृष्ठ नजर आया। उसी को उलटने–पलटने लगी। इसमें एक चुटकुला बहुत मज़ेदार था। हँसते–हँसते लोट–पोट हो गई। अभी डायरी लिखते समय भी हँसी नहीं रुक रही है। फिर से पढ़ पाऊँ इसलिए लिख लेती हूँ इसे।

खरीददार–(मालिक से) इस भैंस की तो एक आँख खराब है, फिर इस भैंस के सात हजार रुपये क्यों माँग रहे हो?

मालिक–भैंस से दूध लेना है या कशीदाकारी करवानी है।

माँ को कल रात से मलेरिया है। मैं तो रात भर उनके पास बैठी रही। खाना भैया ने बनाया। आलू–मटर की सब्जी बनाई। गरम–गरम रोटियाँ सेक लीं। मैंने ज्यों ही पहला कौर मुँह में डाला तो फीका लगा। नमक तो था ही नहीं। माँ ने पूछा, सब्जी कैसी बनी ? मैंने कहा बहुत स्वादिष्ट है। इधर भैया का बुरा हाल। आँखें नीची। पर इससे क्या। नमक नहीं था तो कोई बात नहीं, बाद में डाल दिया। सोच रही थी–अगर भैया दो बार नमक डाल देते तो?

3 जनवरी, 97

पिकनिक का दिन रहा आज का। जहाँ हम गए वह स्थान बहुत सुन्दर था। हरे–हरे वृक्षों से घिरा हुआ, पानी से लबालब भरा एक सरोवर। शान्त वातावरण। पक्षियों की चहचहाहट। वहाँ पहुँचकर हम छोटी–छोटी टोलियों में बँट गए। मैं तो सईदा, नीलू, विमला और अंजू के साथ रही।

पहले तो वहाँ चारों ओर घूमते रहे। झूलों पर झूले। फिर सरोवर पर गए तो मछलियाँ देखते रहे। डुबती–उतराती, रंग–बिरंगी तथा छोटी–बड़ी मछलियाँ। तभी बहन जी ने बुला भेजा।

अब सभी मैदान में आ इकट्ठे हुए। नरम–नरम घास पर बैठ गए। गुनगुनी धूप थी। बारी–बारी से हमने गाना गाया। ढोलक बजी तो नाच–गान में रम गई सब। मंजु जो कक्षा में चुपचाप बैठी रहती थी, आज खूब नाची। मैंने भी जादू का खेल दिखाया। खेल में जिसने जो फल चाहा, उसे उसी फल की खुशबू सुँघा दी। जो मिठाई माँगी वही चखा दी। कितना आनंद आया, लिख न सकूँगी। मेरे जादू के करिश्मे को देख संजू तो मचल ही गई। बोली–''एक दो जादू तो मुझे भी सिखा दो, दीदी। मैं भी विज्ञान के ऐसे दूसरे खेल सीखूँगी। मन करता है पिकनिक के दिन बार–बार आएँ।

4 जनवरी, 97

आज रविवार था। कहीं आने–जाने की इच्छा तो थी नहीं। माँ ने चाट बनाई थी। जमकर नाश्ता किया। चाय की चुस्कियाँ लीं और फिर सुबह–सुबह ही बैठ गई। सोचा वह पुस्तक ही पढ़ डालूँ जो कल पुस्तकालय से लाई थी। नाम तो बड़ा अजीब था–तोतो–चान। एक जापानी लड़की की कहानी है। बड़ी मज़ेदार। जिस स्कूल में वह पढ़ती थी वह रेल के छह डिब्बों में चलता था। जो जहाँ चाहे बैठे। जो चाहे पढ़े। शिक्षक का कोई डर नहीं। पूरी आज़ादी। तोतो–चान एक मनमौजी लड़की जिसे अपनी शरारत के कारण कई स्कूल बदलने पड़े, वह यहाँ रेल के डिब्बेवाले स्कूल में जम गई। उसका जीवन बदल गया। मुझे यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी। सोचती हूँ–क्या हमें भी पढ़ने की ऐसी आज़ादी मिल सकती है?

5 जनवरी, 97

आज का पूरा दिन उदासी में बीता। माँ ने मुझे बार-बार टोका। उदासीनता का कारण जानना चाहा। पर, मैं कुछ बोल न पाई। क्या बताऊँ, वह मेरी सहेली नीलू है न, कल से पढ़ने नहीं जाएगी। एक महीने बाद यह गाँव भी छूट जाएगा, उससे। उम्र तो मेरी जितनी ही है। पर, घरवाले उसके हाथ पीले कर के ही दम लेंगे। मुझे मिली तो गले लगकर रोने लगी। कहती थी-''बहन, पढ़ने का बेहद मन है। पर, क्या करूँ, कोई मेरी बात सुनता ही नहीं।''

नीलू कक्षा में अव्वल आती थी। खेलने-कूदने में भी किसी से कम न थी। एक ही प्रश्न रह-रहकर मेरे मन में उठ रहा है। क्या लड़कियों को पढ़ने का पूरा-पूरा अवसर नहीं मिलना चाहिए? दुनिया भर की लड़कियाँ आज क्या-क्या करतब दिखा रही हैं। हम हैं कि चौके-चूल्हे के चक्कर से किसी तरह उबर नहीं पाती। मुझे तो नीलू पर भी गुस्सा आता है। आखिर कब तक अपनी इच्छाओं का गला दबाती रहेगी। मैं तो यह स्थिति कदापि.....।

6 जनवरी, 97

स्कूल जाने के लिए समय पर घर से निकली। तपाक से छींक हुई। रिक्शेवाले ने छींका था। दादी माँ ने आवाज़ लगाई-''बिटिया, आज स्कूल न जाओ। सामने की छींक है।'' मेरा मन भी मैला हो गया था। एक पल सोचा-रिक्शा लौटा दूँ। तभी याद आया-आज तो हमारी कक्षा को अभिनय करना था जिसकी मैं प्रमुख पात्र थी। उससे तो मेरा अत्यन्त लगाव है। ''जो होगा सो हो जाएगा'' हिम्मत करके चल ही दी। अभिनय में मैंने भी भाग लिया।

हमारा अभिनय सभी ने सराहा। खूब तालियाँ बजाई। मैं तो व्यर्थ ही छींक से डर गई। उल्टे, मुझे पुरस्कार मिला। शाबाशी अलग। आगे से मैं शकुन-अपशकुनों के फेर में पड़ेवाली नहीं।

7 जनवरी, 97

आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। न पढ़ाई में मज़ा आया न खेल में। कोई डाँट-डपट भी नहीं हुई। कभी-कभी सोचती हूँ, सब लोग लड़कियों को ही क्यों डाँटते हैं?

- संकलित

शब्दार्थ

एकाग्रचित्त	–	एक ही विषय में ध्यान को लगाना, स्थिर चित्त
स्वादिष्ट	–	रुचिकर
ख़ुशबू	–	सुगन्ध
सयानी	–	चतुर स्त्री
करिश्मा	–	चमत्कार, करतब
शरारत	–	चुहलबाजी
तराशना	–	आकार देना
लबालब	–	पूरा भरा हुआ
करिश्मा	–	चमत्कार
उकेरना	–	नक़्क़ाशी करना
रम	–	रमणीक
तराशना	–	सजाना

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से

1. संजू कैसी लड़की थी ? उसे किस चीज़ का शौक़ था ?
2. संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा किससे मिली ?
3. 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक के रचयिता कौन हैं ?

पाठ से आगे

1. "व्यक्ति को प्रत्येक दिन डायरी लिखनी चाहिए।" इस कथन से आप सहमत या असहमत हैं। तर्क दीजिए।
2. आज आपके विद्यालय में सांस्कृतिक समारोह आयोजित होने वाला है। आपको इस समारोह में भाग लेना है। घर से आप जैसे ही विद्यालय के लिए निकले, वैसे ही बिल्ली ने रास्ता काट दिया। अब आप क्या करेंगे और क्यों ?
3. आप एक सप्ताह की डायरी लिखिए। डायरी लिखने में आप इन बातों का ध्यान रख सकते हैं–किनसे मिले, वे कैसे थे, किन-किन बातों पर चर्चा हुई, घटना या दुर्घटना, अपना अनुभव आदि।

   आप डायरी लिखते होंगे। अपनी डायरी की मुख्य-मुख्य बातों को अपने मित्रों से चर्चा कीजिए तथा उनकी डायरी की मुख्य-मुख्य बातें भी उनसे जानिए।

व्याकरण

सजाना क्रिया है। सजाना से सजावट (भाववाचक संज्ञा) बनाने के लिए हम **सजाना** शब्द से **ना** हटाते हैं और **आवट** जोड़ते हैं। यानी सजा+आवट = सजावट। इसी तरह **पढ़ना** से पढ़ाई (भाववाचक संज्ञा) बनाने के लिए हम **पढ़ना** शब्द से **ना** हटाते हैं और **आई** जोड़ते हैं। यानी पढ़+आई = पढ़ाई।

आप भी नीचे दिए गए क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

लिखना

मिलाना

बनाना

चढ़ना

पीसना

गतिविधि

1. मज़ेदार चुटकुलों का संग्रह कर कक्षा में सुनाइए।
2. समाज में व्याप्त अपशकुनों को दूर करने के उपायों पर चर्चा कीजिए।